

श्री कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ॥

❖ छोटा कयामतनामा ❖

मोमिन दुनी का बेवरा

जो नूर पार अर्स अजीम, ए जो बेवरा कयामत^१ का ।
मोमिन दुनी की तफावत, ए फना ओ बीच बका ॥१॥
जब लाहूत से रूहें उतरीं, कह्या अलस्तो बे रब कुंम^२ ।
नासूत जिमीमें जाए के, जिन मुझे भूलो तुम ॥२॥
तब रूहों वले^३ कह्या, हम भूलें नहीं क्योंए कर ।
तुम साहेद^४ किए रूहें फरिस्ते, पल रहे न सकें तुम बिगर ॥३॥
तुम खावंद हमारे सिर पर, अर्स अजीम बका वतन ।
हम क्यों भूलें सुख कायम, तुमारे कदमों हमारे तन ॥४॥
हकें कौल किया भेजों मासूक, तिन के साथ फुरमान ।
भेज इलम लेऊं जगाए, देसी रूह अल्ला सब पेहेचान ॥५॥

१. अंतिम दिन । २. क्या मैं नहीं हूँ खावंद तुम्हारा । ३. तेहेकीक तुम हमारे खाविंद हो ।

४. साक्षी का ।

हाथ रसूल के फुरमान, रूह अल्ला साथ इलम ।
 हादी करावें हजूर बंदगी, खोले पट हक के हुकम ॥६॥
 तीनों सूरत महंमद की, तिन जुदी जुदी करी पुकार ।
 रूहें फरिस्ते लेवें सब साहेदियां, जो लिख भेजी परवरदिगार ॥७॥
 बसरी मलकी और हकी, ए तीनों के जुदे खिताब ।
 एक फुरमान ल्याई दूसरी कुंजी, तीसरी खोले किताब ॥८॥
 लिख भेजी रमूजें इसारतें, दो गिरो तीन सूरत पर ।
 दूसरा बका की न खोल सके, ए वाहेदत गुझ खबर ॥९॥
 हजरत आए आया सब कोई, और ले चलेंगे सब ।
 ए लिखियां जो इसारतें, फुरमाया फिरे न कब ॥१०॥
 चले लैलत कदर से, तकरार जो अव्वल ।
 सो भेले दुनी के क्यों चले, जो उमत अर्स असल ॥११॥
 गिरो बचाई साहेब ने, तले कोहतूर^१ हूद^२ तोफान ।
 बेर दूजी किस्ती पर, चढ़ाए उबारी सुभान ॥१२॥
 अब आई बेर तीसरी, तिनका सुनो विचार ।
 पेहेचान बिना गिरो क्या करे, या यार या सिरदार ॥१३॥
 या अर्स आपकी पेहेचान, या हक हादी रूहें निसबत ।
 गिरो खासी उतरी अर्स से, और दुनी पैदा जुलमत ॥१४॥
 दिल मोमिन अर्स कह्या, सैतान दुनी दिल पर ।
 क्यों गिरो दुनी भेली चले, भई तफावत^३ यों कर ॥१५॥
 ना पेहेचान ना निसबत, दुनी गिरो असल दुस्मन ।
 एक हक न छोड़ें उमत, दुनी दुनियां बीच वतन ॥१६॥
 निसबत इन तफावत, ए भेले चलें क्यों कर ।
 दुनी जिमी गिरो आसमानी, दुनी के पांउं गिरो के पर ॥१७॥

एक ईमान दूजा इस्क, ए पर मोमिन बाजू दोए ।
 पट खोल पोहोचावे लदुन्नी, इन तीनों में दुनी पे न कोए ॥१८॥
 ए दुनी चले चाल वजूद की, उमत चले रूह चाल ।
 लिख्या एता फरक कुरान में, दुनी उमत इन मिसाल ॥१९॥
 कह्या दुनियां दिल मजाजी, सो उलंघे ना जुलमत ।
 दिल अर्स हकीकी मोमिन, ए कहे कुरान तफावत ॥२०॥
 इनमें रूह होए जो अर्स की, सो क्यों रहे दुनी सों मिल ।
 कौल फैल हाल तीनों जुदे, यामें होए ना चल विचल ॥२१॥
 जो मोमिन देखें राह दुनी की, सो रूह नहीं अर्स तन ।
 दुनियां घर जुलमत से, मोमिन अर्स वतन ॥२२॥
 पेहेले चल्या सैयद अकेला, तब तो थी सरीयत ।
 अब अकेले क्यों छोड़िए, गिरो पोहोंची दिन मारफत ॥२३॥
 पेहेले एक जहूद बुजरक, तिन पीठ न छोड़ी महंमद ।
 यार असहाब न चल सके, ताकी दे मसनवी साहेद ॥२४॥
 जहूद कहिए क्यों तिन को, जो करे ऐसे फैल ।
 आगे हुआ सबन के, कदम छोड़ी ना महंमद गैल ॥२५॥
 तिन खोली रूह नजर, जाए हकें बखसी बातन ।
 इन राह सोई चलसी, जो हक अर्स दिल मोमिन ॥२६॥
 दिल मजाजी जो कहे, ताको अर्स दिल कबूं न होए ।
 सो आए न सके वाहेदत में, जिन दिल अबलीस कह्या सोए ॥२७॥
 रसूलें राह बताई मेयराज में, अर्स लेसी सोई मोमिन ।
 देखाई चढ़ उतर, जो हकें खिलवत कहे सुकन ॥२८॥
 मजकूर करी महंमद ने, हक हादी बीच रूहन ।
 हकें कह्या उतरते रूहों को, सो सब मुसाफ करे रोसन ॥२९॥

जो पोहोंच्या इन खिलवतें, दिल हकीकी इन राह ।
 इत दिल मजाजी आए न सके, जित अबलीस दिलों पातसाह ॥३०॥
 भूले करे जाहेरियों सिफत, सुध न परी बातन ।
 मारफत सूरज उगे बिना, क्यों देखें बका अर्स तन ॥३१॥
 तो दें बड़ाई जाहेर परस्तों को, जो समझे नहीं हकीकत ।
 हक इलम आए बिना, तो क्यों समझे मारफत ॥३२॥
 सरीयत करे फरज बंदगी, करे जाहेर मजाजी दिल ।
 बका तरफ न पावे अर्स की, ए फानी बीच अंधेर असल ॥३३॥
 दिल हकीकी जो मोमिन, सो लें माएने बातन ।
 हक इलम इस्क हजूरी, रूहें चलें बका हक दिन ॥३४॥
 फेर आए रसूल स्याम मिल, सोई फेर आये यार ।
 देख निसबत पांचों दुनीमें, क्यों छोड़ें असल अर्स प्यार ॥३५॥
 कहे महंमद पेहेले जब मैं चलों, यार आए मिलें खिन मांहें ।
 ए वाहेदत की साहेदी, जाग्या जुदा रहेवे नाहें ॥३६॥
 मैं अव्वल जो चलों, साथ आए मिलें सब कोए ।
 तो सिफत दुनियां मिने, खासी गिरो की होए ॥३७॥
 इत मैं चलो जो अव्वल, कर यारों सों सहूर ।
 तो खूबी होए तेहेकीक, नूर पर नूर सिर नूर ॥३८॥
 खूबी खुसाली अधिक, और ज्यादा सोभा संसार ।
 ले प्याला रूह जगाए के, ल्यो इस्क चलो हादी लार ॥३९॥
 पोहोंचे नहीं अंग दिल के, तार्थें रूह अंग लीजे जगाए ।
 तो लों आपा ना मरे, जोलों खुदी न देवे उड़ाए ॥४०॥
 जब उठें अंग रूह के, सो तूं जागी जान ।
 आई अर्स अंग लज्जत, तिन पूरी भई पेहेचान ॥४१॥

जो अंग होवे अर्स की, उपजत नहीं अंग आहे ।
 बारे हजार रूहन में, सो काहे को आप गिनाए ॥४२॥
 करवट लेते सूते नींदमें, नाला^१ मारत जे ।
 याद बिगर किए अंग आवहीं, स्वाद आसिक मासूक के ॥४३॥
 जो होए आवे मोमिन रूह से, सो कबू ना और सों होए ।
 इत चली जो रूह जगाए के, सो सोभा लेवे ठौर दोए ॥४४॥
 देख बिछोहा हादी का, पीछा साबित राखे पिंड ।
 धिक धिक पड़ो तिन अकलें, सो नहीं वतनी अखंड ॥४५॥
 ए जाहेर देखावें दोस्ती, जाए रूह न अंदर पेहेचान ।
 ए मोमिन रूहें जानहीं, जाको अर्स दिल कह्यो सुभान ॥४६॥
 रूहें दम बिछोहा न सहें, जो होए बका की असल ।
 रूह हादी की चलते, अरवा आगूं हीं जाए चल ॥४७॥
 दिल हकीकी रहे ना सकें, जो आया लदुन्नी दरम्यान ।
 दिल मजाजी क्या करे, हुआ फरक जिमी आसमान ॥४८॥
 कोई छोड़े ना अपनी असल, पोहोंचे सिफली^२ का मलकूत ।
 जबरूती जबरूत में, रूहें लाहूती लाहूत ॥४९॥
 बेवरा लिख्या मुसाफ में, लिखे जुदे जुदे बयान ।
 दिल मजाजी क्यों समझे, जाको मुरदार कह्या फुरकान ॥५०॥
 ए उपले पानी उजूसे, हुआ न कोई पाक ।
 ए पानी न पोहोंचे दिल को, क्या होए ऊपर धोए खाक ॥५१॥
 किताबों सबों यों कह्या, अर्सें पोहोंचे रूह पाक ।
 दिल मजाजी इन जिमी के, मिल जाए खाक में खाक ॥५२॥
 खाक कछू न पावहीं, रूह तो अपने बीच असल ।
 कोई देखे सहर करके, तो पोहोंचे हादी कदमो नसल ॥५३॥

गुम हुई जिनों की अकलें, होए नजीक न तिनों हक ।
 जान बूझ न छोड़े इन जिमी, तिन से रहेनी न होए बेसक ॥५४॥
 कदी केहेनी कहे मुख से, बिन रहेनी न होवे काम ।
 रहेनी रूह पोहोंचावहीं, केहेनी लग रहे चाम ॥५५॥
 केहेनी सुननी गई रात में, आया रहेनी का दिन ।
 बिन रहेनी केहेनी कछुए नहीं, होए जाहेर बका अर्स तन ॥५६॥
 केहेनी करनी चलनी, ए होंए जुदियां तीन ।
 जुदा क्या जाने दुनी कुफर की, और ए तो इलम आकीन ॥५७॥
 अर्स सब जाहेर हुआ, नूर तजल्ला हक ।
 रूहअल्ला महंमद मेंहेंदी ने, उड़ाए दई सब सक ॥५८॥
 सूर ऊग्या मारफत का, महंमद मेंहेंदी दिल ।
 नूर अंधेर जुदे हुए, जो रहे थे रात के मिल ॥५९॥
 कुफर और ईमान की, सुध न थी बीच रात ।
 अब सुध परी सबन को, जाहेर हुई हक जात ॥६०॥
 ना सुध मोमिन मुसलिम, ना सुध काफर मुनाफक ।
 सो सुध हुई सबन को, किया बेवरा इलम हक ॥६१॥
 हक इलम मारफत की, जाहेर किया नबी दिल नूर ।
 कुफर काढ़ ईमान दिया, ऊग्या दिल मोमिन अर्सों सूर ॥६२॥
 खोली इलमें सब किताबें, या कतेब या वेद ।
 सब खोले मगज मुसाफ के, मांहे छिपे हुते जो भेद ॥६३॥
 जेता कोई पैगंमर, सो सब जहूदों मांहे ।
 इसलाम मोमिन सब याही में, कोई जाहेरियों में नाहे ॥६४॥
 जाकी करे मुसाफ सिफतें, औलिए अंबिए पैगंमर ।
 सो हुए सब जहूदों मिनें, जो देखे बातून सहूर कर ॥६५॥

जिने लिए माएने बातून, हुआ पैगंमर सोए ।
उमत औलिए अंबिए, बिन बातून न हुआ एक कोए ॥६६॥
जाहेरी बड़े जानें आपको, और समझें नहीं हकीकत वतन ।
हक इलम आया नहीं, तोलों होए नहीं रोसन ॥६७॥
कह्या जाहेर मांहे दुनियां, और बातून मांहे हक ।
ए वेद कतेब पुकारहीं, हक इलम कहे बेसक ॥६८॥
ए नूर जाहेर तो हुआ, जब कुराने खोली हकीकत ।
रात मेट के दिन किया, सो दिल महंमद सूर मारफत ॥६९॥
कौल किया हकें रूहों सों, बीच बका वतन ।
सो साइत आए मिली, जाहेर हुआ अर्स तन ॥७०॥
एक खुदी थी दुनी में, दूजी सुभे सक ।
करते फैल तरफ हवा के, पीठ दिए तरफ हक ॥७१॥
सो खुदी काढी जड़ मूल से, हुए जाहेर हक इलम ।
सक सुभे कछू ना रही, हुई सब में एक रसम ॥७२॥
जुदी जुदी जातें कहावतीं, फैल करते जुदे नाम धर ।
सो रात मेट के दिन किया, हुई जाहेर सबों फजर ॥७३॥
जिनों खुली नजर रूह की, सोई पोहोंचे अर्स हक ।
जिनों छूटी न नजर जाहेरी, सो पड़े दुनी बीच सक ॥७४॥
जिनों खुली हकीकत मारफत, सो सहे ना बिछोहा खिन ।
और हक इलम खोल्या आखिरी, ए बीच असल अर्स तन ॥७५॥
जो जाग उठ बैठा हुआ, जगाया हक इलम ।
सो हादी बिना पल एक ना रहे, छोड़ न सके कदम ॥७६॥
सब साहेदी दर्ई जो हदीसों, और अल्ला कलाम ।
सो साहेदी ले पीछा रहे, तिन सिर रसूल न स्याम ॥७७॥

जिनों लदुन्नी पोहोंचिया, लिया बका अर्स भेद ।
 सो क्यों गिरो सों जुदा पड़े, जाए परे कलेजे छेद ॥७८॥
 जाए खुली हकीकत मारफत, पाई अर्स पेहेचान ।
 सो क्यों सहे बका बिछोहा, जिनों नींद उड़ी निदान ॥७९॥
 ए पोहोंच्या मता सब रूहों को, जब पोहोंचाया इलम हक ।
 इत सक जरा ना रही, पोहोंच्या हक बका मुतलक ॥८०॥
 जाको हक इलम पोहोंचिया, तिन हुआ सब दीदार ।
 अंतर कछुए ना रह्या, वह पोहोंच्या नूर के पार ॥८१॥
 जाको हक इलम आया नहीं, ताए पट रह्या अंतराए ।
 हक नजीक थे सेहेरग से, तहां से दूर ले गए उठाए ॥८२॥
 रूह ठौर है रूह के, ए जो लेती इत दम ।
 सो गया असल जुलमतें, जिनों सुध परी ना हक कदम ॥८३॥
 लिया लदुन्नी जिनने, सो क्यों सोवे कबर मांहें ।
 जिने मूल सरूप देख्या अपना, उठ जागे सोवे नाहें ॥८४॥
 वाको तो फजर हुई, हुआ बका सूरज दीदार ।
 मिल्या कौल अव्वल का, जो किया था परवरदिगार ॥८५॥
 जो उठी कयामत को, सो क्यों सोवे ऊगे दिन ।
 आया असल तन में, बीच बका वतन ॥८६॥
 जो कदी वह आगे चली, जिमी बैठी वह जिमी मांहें ।
 पांचों पोहोंचे पांचों में, रूह अपनी असल छोड़े नाहें ॥८७॥
 यों इलम समझावते, जो कोई ना समझत ।
 तिन मजाजी दिल पर, जिन करो नसीहत ॥८८॥
 काफर मुसलिम मोमिन, जो ए जुदे न होते तीन ।
 तो अर्स तन और जिमी के, क्यों पाइए कुफर आकीन ॥८९॥

अर्स बका तन मोमिन, दुनियां फना जिमी तन ।
 ताकी केहेनी रहेनी क्यों होवे, क्यों होए एक चलन ॥९०॥
 जो हक अर्स दिल मोमिन, मिल के करो सहूर ।
 कही जिमी तले की दुनियां, रूहें नूर पार तजल्ला नूर ॥९१॥
 मोमिन और दुनी के, चाहिए सब विध जुदागी ।
 दुनियां पैदा जुलमत से, रूहें उतरी अर्स अजीम की ॥९२॥
 ए सब बातें याद राखियो, फल बखत आखिरत ।
 चलते फरक जो ना होवे, तो रूहों की क्यों करे हक सिफत ॥९३॥
 मर मर सब कोई जात हैं, चाहिए मोमिनोँ मौत फरक ।
 दुनियां बीच गफलत के, मोमिन जागें दिल अर्स हक ॥९४॥
 जो रूह होसी मोमिन, चल्या चाहिए सावचेत ।
 कह्या काफर स्याह मुंह आखिर, मुख मोमिन नूर सुपेत ॥९५॥
 मेला मजाजी दिलों का, ए चले बांधी जात कतार ।
 ए अर्स दिल हकीकी जीवते, क्यों चलें भांत मुरदार ॥९६॥
 बीच फना जीवों के, क्यों रहें बका अर्स तन ।
 पल इनमें रहे ना सकें, जिन सिर बका वतन ॥९७॥
 ए जो दुनियां दिल मजाजी, या उनके सिरदार ।
 ना पोहोंचे फना बका मिने, ए हक कौल परवरदिगार ॥९८॥
 मोमिन उतरे नूर बिलंद से, ए दुनी पैदा जुलमत ।
 सांच झूठ क्यों मिल सके, क्यों रास आवे सोहोबत ॥९९॥
 सांचे सांचा मिल चले, मिले झूठा झूठों मांहे ।
 जो जैसा तैसी सोहोबत, इनमें धोखा नाहे ॥१००॥
 अर्स दिल मोमिन कह्या, दुनी दिल पर अबलीस ।
 ए सैतान दोस्त न किसी का, जो काट देवे कोई सीस ॥१०१॥

लाहूत बका फना नासूत, ए तौल देखो दोए ।
 चिरकीन^१ जिमी से निकस के, क्यों न लीजे बका खुसबोए ॥१०२॥
 जान बूझके भूलिए, इलम पाए बेसक ।
 देखो दिल विचार के, क्यों राजी करोगे हक ॥१०३॥
 जीवते मारिए आपको, सब्द पुकारत हक ।
 जो जीवते न मरेंगे मोमिन, तो क्या मरेंगे मुनाफक^२ ॥१०४॥
 फुरमाए कलाम सब रूहों को, ए मोमिन करें सहूर ।
 इन अंधेरी से निकस के, क्यों न जैए पार नूर ॥१०५॥
 हक हुकम हादी चलावते, क्यों न लीजे अर्स राह ।
 मूल सरूप ले दिल में, उड़ाए दीजे अरवाह ॥१०६॥
 चलना सबों सिर हक है, ए जान्या सबों तेहेकीक ।
 पर आप बस कोई न चल्या, चले एक दूजे की लीक^३ ॥१०७॥
 जो कोई इत जागिया, सो क्यों चले परवस ।
 सब सावचेत सुरत बांध के, बीच उठिए अपने अर्स ॥१०८॥
 जो जागी इत होएसी, तिनका एही निसान ।
 मूल सरूप ले सुरत में, पट खोलिए कर पेहेचान ॥१०९॥
 भला कहे दुनियां मिने, न भूलिए अपने तन ।
 हक हादी रूहें बीच खिलवत, उठिए बीच बका वतन ॥११०॥
 जो मसलहत^४ कर चलिए, अर्स रूहें मिल कर ।
 अपनी जुदाई दुनी से, सो क्यों होए इन बिगर ॥१११॥
 अपनी जुदाई दुनी से, किया चाहिए जहूर ।
 दोऊ एक राह क्यों चलें, वह अंधेरी एह नूर ॥११२॥
 महामत कहे सुनो मोमिनो, मेहेर हक की आपन पर ।
 सब अंगों देखो तुम, तब खुले रूह की नजर ॥११३॥

॥प्रकरण॥१॥चौपाई॥११३॥

बाब पैगंमरों का

जेते पैगंमर भए, जिनों पोहोंचाया हक पैगाम ।
 पाई जबरईल से बुजरकी, जो पोहोंच्या नूर मुकाम ॥१॥
 हकीकत कुरान की, सो पोहोंची ठौर नूर ।
 आगे हक के दिल की, सो मारफत में मजकूर ॥२॥
 हुआ मेयराज महंमद पर, तिन में बका सब बात ।
 महंमद पोहोंच्या हजूर, तहां देखी हक जात ॥३॥
 देखे मोती^१ पूर नूर से, कह्या मुंह पर कुलफ^२ तिन ।
 इन कुलफ को खोलोगा, तेरा दिल रोसन ॥४॥
 गुनाह तेरी उमत का, कुलफ मुंह मोतियन ।
 देख दाहिने हाथ पर, जो हक मुख कहे सुकन ॥५॥
 किस वास्ते फिकर करे, देख दाहिने हाथ पर ।
 कुलफ मोतियों के मुंह पर, सब नूर आया महंमद नजर ॥६॥
 हकें कह्या गुनाह किया उमतें, कह्या कुलफ ऊपर दिल ।
 ए जो दर्ई फरामोसी खेल में, जो उतरते मांग्या रूहों मिल ॥७॥
 कहूं पेहेले जंगल जरी जवेर, रोसन नूर झलकत ।
 जोए^३ किनारें दरखत, पाक खुसबोए बेहेकत ॥८॥
 देख्या हौज अर्स का, द्योहरियां गिरदवाए ।
 और जंगल पूर मोतियों से, दिया महंमद को देखाए ॥९॥
 इहां लग साथ जबरईल, पोहोंच्या इन मकान ।
 कहे आगे मेरे पर जलें, चढ़ सक्या न चौथे आसमान ॥१०॥
 महंमद की बुजरकी, बीच इन कलाम ।
 और कही हकीकत, आखिर आवने ईसा इमाम ॥११॥

पाया बीच नासूत के, हजरत ईसे दीदार ।
 दर्ई कुंजी बका की, देखे लैलत कदर तीन तक़रार ॥१२॥
 हक बैठे आए अंदर, पट अर्स दिए सब खोल ।
 जो कही मारफत महंमदें, सो रूहअल्ला कहे सब बोल ॥१३॥
 जो हकमें किए नबिएं जाहेर, दूजे रखे रसूल पर अखत्यार ।
 और गुझ रखे जो तीसरे, सो कहे रूहअल्ला कर प्यार ॥१४॥
 अब कहूं रूहअल्लाह की, जिन दर्ई महंमद साहेदी ।
 मेरा दिल उनसे रोसन हुआ, पाई न्यामत बका दोऊ की ॥१५॥
 जित जबरईल ना चल सक्या, आगे परे न पाए ।
 सो ए ठौर देखे सबे, बरकत रूहअल्लाह ॥१६॥
 हौज जोए आई नजरों, और नूरजलाली हद ।
 इलम ईसे के देखाया, और मुसाफ हदीस महंमद ॥१७॥
 और जो मजकूर हुई अंदर, कौल कहे इसारत ।
 ए साहेदी हादी मोमिन बिना, तो ए किनकी को खोलत ॥१८॥
 देखी सूरत अमरद^१, तासों किया मजकूर ।
 सो ए दुनी में महंमदें, सब मेयराजें किया जहूर ॥१९॥
 दुनियां चौदे तबक में, जाकी तरफ न पाई किन ।
 सो सब मेयराज में, रसूलें करी रोसन ॥२०॥
 पर ए बानी सो समझे, जो पोहोंच्या होए इन मजल ।
 और क्यों समझें ए माएने, जो इन राह में जात हैं जल ॥२१॥
 इत पोहोंच्या ईसा रूहअल्ला, सो भी महंमद की सूरत ।
 ताको हकें कही रूह अपनी, जाको खावंद खिताब आखिरत ॥२२॥
 महंमद कहे ईसा आवसी, और महंमद मेंहेंदी इमाम ।
 मार दज्जाल कुफर दुनी का, एक दीन करसी तमाम ॥२३॥

एक दीन तब होवहीं, जब साफ होवें सब दिल ।
 ए हक बिना न होवहीं, जो चौदे तबक आवें मिल ॥२४॥
 सो ए खिताब रूहअल्ला का, या महंमद सिर खिताब ।
 या तो सिर इमाम के, जो आखिर खोलसी किताब ॥२५॥
 सोई खोले ए माएने, जिन लई मजल इन ठौर ।
 ए बानी वाहेदत की, दूजा केहेते जल मरे और ॥२६॥
 ए जो औलाद आदम की, दिल मजाजी ऐसा दुस्मन ।
 पूजत सब हवा को, सो क्यों सुनी जाए फुरकान इन ॥२७॥
 हक महंमद मोमिन मुसाफ, ए पेहेचान होसी जब ।
 झूठ सांच दोऊ मिल रहे, पाउ पलमें जुदे होसी तब ॥२८॥
 ए सब पैदा महंमद के नूर से, अव्वल आखिर सोई नूर ।
 एक साइत न खाली नूर बिना, तब दुनी देखे जब होसी जहूर ॥२९॥
 सिर खिताब जमाने खावंद, सो करसी मुसाफ जहूर ।
 झूठ दूर होए रात अंधेरी, सब देखें हक अर्स ऊगे सूर ॥३०॥
 सब की जुबां से महंमद, सब पर करसी हिदायत ।
 ए सुकन लिखे सब किताबों, पर क्यों समझे दम गफलत ॥३१॥
 अव्वल आखिर बीच महंमद, इत सब जाने दुनी कलाम ।
 हकें मासूक कह्या महंमद को, सो क्यों समझे दुनी आम ॥३२॥
 जेता कोई रूह मोमिन, जाए पोहोंच्या हक इलम ।
 सो बात समझे हक अर्स की, जिन दिल पर लिख्या बिना कलम ॥३३॥
 और जाहेर दिल जो मजाजी, सो भी कहे गोस्त टुकड़े ।
 सो क्यों सुनसी केहेसी क्या, जो कहे अंधे बेहेरे मुरदे ॥३४॥
 दिल मोमिन अर्स कह्या, उतरे भी अर्स से ।
 हक बैठक इनों दिल पर, ए सिफत न आवे जुबां में ॥३५॥

कह्या दुनी निकाह^१ अबलीस से, दिल मजाजी तिन पैदास ।
 जेती औलाद आदम की, पूजे हवा चले लिबास ॥३६॥
 कह्या महंमद हक के नूर से, नूर महंमद के मोमिन ।
 हक हादी रूहें वाहेदत, इत मिले न दूजा सुकन ॥३७॥
 कहे तिहत्तर फिरके महंमद के, एक नाजी नारी बहत्तर ।
 नाजी को हिदायत हक की, खड़ा बीच राह के पर ॥३८॥
 और तफरका^२ भए, चले कौल तोड़ कर ।
 दाएं बाएं चलाए दुस्मनें, मारे गए हक बिगर ॥३९॥
 मेयराज हुआ महंमद पर, कोई और न आया ढिग इन ।
 सो आखिर ईसा इमामें, किए मेयराज में सब मोमिन ॥४०॥
 खूबियां आखिर बखत की, किन मुख कही न जाए ।
 खूबी कहिए तिन की, जो सब्द मांहें समाए ॥४१॥
 अव्वल जमाने के सैयद, और बड़े केहेलाए पैगंमर ।
 पर सो बराबरी कर ना सके, जो आई उमत महंमद की आखिर ॥४२॥
 लिख्या सब कुरान में, माएने मगज सब्द ।
 क्या समझें अव्वल कतार जो, दुनी बांधी जाए मांहें हद ॥४३॥
 रूहअल्ला मुरदे उठावत, हक का हुकम ले ।
 आखिर अपने हुकम उठावहीं, मोमिन महंमद के ॥४४॥
 इन बिध लिख्या जाहेर, तो भी देखे न खुलासा ।
 सब बोले फना में रात को, किया उमतें फजर बका ॥४५॥
 जो लिखी सबे बुजरकियां, सो सब बीच आखिर ।
 सो गिरो नाजी महंमद की, लिखे नामे याके फैलों पर ॥४६॥
 अव्वल आखिर कयामत लग, कह्या नूर चढ़ता नबी का ।
 खाली न जमाना महंमद बिना, ए बीच मुसाफ हदीस लिख्या ॥४७॥

ए जाहेर करे सोई बुजरकी, कह्या जिनका दिल अर्स ।
 आखिर सोई नजीकी मोमिन, जो अर्स मता के वारस ॥४८॥
 मोमिन उतरे नूर बिलंद से, कौल किया हक सों जिन ।
 कह्या रसूल तुम पर आवसी, सो करसी तुमें चेतन ॥४९॥
 और भेजोंगा फुरमान, सब इत की हकीकत ।
 और इसारतें रमूजें, मासूक देसी तुमें मारफत ॥५०॥
 दुनियां पैदा कलमें कुंन से, असल उनों जुलमत ।
 जिन मिल जाओ तिन में, तुम हादी मुझ से निसबत ॥५१॥
 तुम आप में रहियो साहेद, और गवाही फरिस्ते ।
 मैं भी साहेद तुम में, तुम जिन भूलो सुकन ए ॥५२॥
 याद कीजो मेरे अर्स को, और निसबत हक हादी ।
 इलम देऊं मैं अपना, जासों सक रहे न जरे की ॥५३॥
 खेल किया तुम वास्ते, ज्यों बाजी के कबूतर ।
 जिन मिल जाओ तिन में, ओ तुम नहीं बराबर ॥५४॥
 हांसी इसही बात की, मेरा इलम तुमको जगाए ।
 तुम बका करोगे दम खेल के, पर सकोगे न आप उठाए ॥५५॥
 ऐसा फरेब देखावसी, तुम हूजो खबरदार ।
 तुम जिन भूलो आप अर्स मुझे, मैं तुमारा परवरदिगार ॥५६॥
 हम कबू न भूलें तुमको, बैठेंगे पकड़ कदम ।
 हम तुमारे ऐसे आसिक, तुमें छोड़े नहीं एक दम ॥५७॥
 तुम साहेब हमारे ऐसे मासूक, हम ऐसे तुमारे आसिक ।
 तुमको क्यों हम भूलेंगे, और देओगे इलम बेसक ॥५८॥
 ए तो बड़ी हांसी कोई खेल में, जो ऐसी होए हमसे ।
 मोमिन रहियो साहेद, ए हक कौल करत हममें ॥५९॥

लिख्या इन बिध जाहेर, तो भी पावें न खेल कबूतर ।
 अकल न पोहोंचे इनों की, सो भी लिख्या लिखन हारे यों कर ॥६०॥
 सब्द लिखे जो बुजरकों, सो सब आखिरी उमत का ।
 रात सब्द सब फना के, सब्द आखिरी दिन बका ॥६१॥
 सो ए बड़ाई सब उमत की, जो कही महंमद की आखिर ।
 वह खावंद कहे खेल के, ए खेल के कबूतर ॥६२॥
 एता फरक कहा जाहेर, तो भी करें इन की सरभर^१ ।
 वह फरक मुरदे ज्यों जीवते, पर क्या करें अकल बिगर ॥६३॥
 फुरमान ल्याया हक का, महंमद आया किन ऊपर ।
 एती खबर किने ना करी, जोलों हुई आखिर ॥६४॥
 बीती सदी अग्यारहीं, ल्याए रसूल फुरमान ।
 बड़े उलमा^२ आरिफ^३ कहावहीं, पर पड़ी न काहू पेहेचान ॥६५॥
 पढ़सी को फुरमान को, लेसी को हकीकत ।
 कलाम अल्ला को खोलसी, को लेसी हक मारफत ॥६६॥
 जोलों फुरमान खुल्या नहीं, तोलों रात है सब में ।
 एही फुरमान करसी फजर, जब लिया हाथ हादी ने ॥६७॥
 कौल तोड़ जुदे किए कुफरें, मेटे मसी तफरका^४ ।
 एक दीन तब होएसी, दिन ऊगे अर्स बका ॥६८॥
 ए अव्वल कहा महंमद ने, आए ईसा मारसी दज्जाल ।
 साफ दिल होसी सबों, कराए दीदार नूरजमाल ॥६९॥
 इमाम इमामत उमत की, करसी अर्स अजीम ऊपर ।
 ए होसी हैयाती सिजदा, तब हुई तमाम फजर ॥७०॥
 जो अर्स से रूहें उतरीं, तामें था रूहअल्ला सिरदार ।
 कहा तुम पर रसूल भेजोंगा, हकें यों कौल किया करार ॥७१॥

इन विध लिख्या जाहेर, पर किने न किया बयान ।
 ए होए तिनहीं से जाहेर, हकें जिन पर भेज्या फुरमान ॥७२॥
 खिताब रसूली महंमद पर, तमामी आखिर मेंहेंदी खिताब ।
 ए ले इलम आखिरी हक का, महंमद मेंहेंदी खोले किताब ॥७३॥
 फुरमान हकें लिख भेजिया, दिया हाथ रसूल के ।
 रूह अल्ला पर भेजिया, किन खबर न पाई ए ॥७४॥
 ए आगे फुरमाया रसूलें, कौल तोड़ होसी तफरका ।
 एक नाजी^१ बहत्तर नारी^२ लिखे, पर किन पाया न खुलासा ॥७५॥
 कौल सोई तोड़ेंगें, जिनों होसी मजाजी दिल ।
 होसी जुदे बुजरकी वास्ते, कह्या फिरसी फिरके मिल मिल ॥७६॥
 जाहेर लिख्या मिस्कात में, मैं डरों पीछले इमामों से ।
 गुमराह करसी दुनी को, ऐसे बुजरक होसी आखिर में ॥७७॥
 होसी दिल सैतान का, और वजूद आदमी का ।
 लोहू सैतान ज्यों बीच वजूद, ए बीच हदीस लिख्या ॥७८॥
 तरफ चारों बीच वजूद के, लिख्या विध विध कर ।
 यों दुनी निगली सैतान ने, एक हकें मोमिन बचाए फजर ॥७९॥
 भाँत भाँत आलम में, रसूलें करी पुकार ।
 बिन मोमिन कोई न कादर, जो सुनके होए हुसियार ॥८०॥
 जिन विध लिख्या कुरान में, हदीसों में भी सोए ।
 ए अर्स दिल मोमिन जानहीं, जो नूर बिलंद से उतर्या होए ॥८१॥
 आखिर खिताब सिर रसूल, दूजा सिर मेंहेंदी इमाम ।
 इन विध खावंदी रूहअल्लाह की, ए तीनों एक दीन करसी तमाम ॥८२॥
 ए अव्वल कह्या रसूलें, पर क्यों पावे मजाजी दिल ।
 ना बूझे हक हादी रूहों की, जो चौदे तबक मथें मिल ॥८३॥

केहे केहे रसूलें फेर कही, ज्यों समझें सब कोए ।
 पर ए बूझें हक हादी रूहें, और बूझे जो दूसरा होए ॥८४॥
 कहे हादी हक इलम से, ज्यों एक हरफें बूझे सब बयान ।
 पर नफस^१ मजाजी क्या जानहीं, जाके दिल आँख बुध न कान ॥८५॥
 जो रूह होवे अर्स अजीम की, नूर बिलंद से उतरी ।
 सोई समझे हक इसारतें, और खबर न काहू परी ॥८६॥
 ना तो इन बिध कही जो रसूलें, ज्यों सब समझी जाए ।
 जाको असल ना दिल अकल, तिन हक कौल क्यों समझाए ॥८७॥
 जो हक मुख आपे कही, करता हों इसारत ।
 सो हक की हादी बिना, और न कोई समझत ॥८८॥
 हकें लिखे समझ इसारतें, या ल्याया समझे सोए ।
 या समझें आई जिन पर, और बूझे जो दूसरा होए ॥८९॥
 तो एते दिन बूझी नहीं, साल बीते नब्बे हजार पर ।
 क्यों समझे औलाद आदम की, हक दिल छिपी खबर ॥९०॥
 निकाह हवा सों कही आदम की, निकाह अबलीस औलाद आदम ।
 पूजे हवा खाहिस^२ ले अपनी, जेता बुजरक आदम हर दम ॥९१॥
 तो रही छिपी बीच फुरमान के, निकाह अबलीस सोहोबत अकल ।
 सो क्यों पावें मगज मुसाफ का, कहे मुरदे मजाजी दिल ॥९२॥
 जिन गेहूं खाया कौल तोड़ के, आदम तिन नसल ।
 सो क्यों पावे रमूजें हक की, जो लिख्या अर्स असल ॥९३॥
 ए फुरमान रूहअल्ला पर, ल्याया हक का रसूल ।
 इमाम खिताब खोले किताब, परे न मारफत भूल ॥९४॥
 खोली अग्यारहीं सदी मिनें, ए जो किताब फुरकान^३ ।
 मार दज्जाल करे एक दीन, मिलाए कयामत निसान ॥९५॥

इमाम मसी मिल रसूल, मार दज्जाल करसी फजर ।
 रोज फरदा सदी बारहीं, खोली बातून उमत नजर ॥९६॥
 काफर कौल कयामत के, जानते थे झूठ कर ।
 सो सरत महंमद की सत हुई, अग्यारहीं सदी आखिर ॥९७॥
 कोई एक कौल महंमद का, हुआ न चल विचल ।
 पर क्यों बूझें औलाद आदम की, जिनकी अबलीस नसल^१ ॥९८॥
 साँचे कौल महंमद के, फिरवले सब पर ।
 जो कछू कह्या सो सब हुआ, पर समझे नहीं काफर ॥९९॥
 दीदार हुआ मुरदे उठे, आए हक इलम ।
 भिस्त दोजख कही त्यों हुई, किया हिसाब चलाए हुकम ॥१००॥
 कौल केतेक आए मिले, और केतेक हैं मिलने ।
 भूल परे ना किसी कौल की, रसूलें कह्या तिनमें ॥१०१॥
 निसान मिले सब बातून, अब जाहेर होसी सब ।
 दाभ^२-तूल^३-अर्ज^४ काफरों, स्याह मुंह करसी तब ॥१०२॥
 जब खोले मगज मुसाफ के, द्वार हकीकत मारफत ।
 एही दिन ऊगे होसी जाहेर, देखसी दुनी कयामत ॥१०३॥
 महामत कहे ए मोमिनो, जिन जागी भूलो कोए ।
 राह अर्स इस्क न छोड़िए, ज्यों सोभा लीजे ठौर दोए ॥१०४॥

॥प्रकरण॥२॥चौपाई॥२१७॥

प्रकरण तथा चौपाइयों का संपूर्ण संकलन

प्रकरण ५०३, चौपाई १८२२७

॥छोटा कयामतनामा सम्पूर्ण॥